विशेषज्ञ बोलते है

विशेषज्ञों का यह कहना था

मुकेश गुप्ता
डायरेक्टर,
वेल्थकेअर सेक्युरिटीस
प्राइवेट लिमिटेड

एक पाठक ने हमें पूछा : स्टॉक मार्केट्स में उतार-चढ़ाव रहते हैं, तो क्या हमें डेट मार्केट्स में निवेश करना चाहिए?

आम आदमी के शब्दों में कहें तो वोलैटिलिटी का मतलब बाज़ार में थोड़े समय का उतार-चढ़ाव है और दूसरा कुछ नहीं। मंदी के ऐसे दौर में निवेशक अक्सर नुक़सानों की संभावनाओं से चिंतित हो कर अपने एसआईपीस को बंद कर देते हैं। ये मार्केट्स का प्राकृतिक स्वभाव है कि वो कम समय के लिए ज़रुर चढ़ता उतरता है। मार्केट के उतार-चढ़ाव को एक अवसर समझना चाहिए, न कि कोई ख़तरा। नीचे दिए गए केसेस पर ध्यान दीजिए:

1. साल 2000 आईटी बबल बर्स्ट: सेनसेक्स डेढ़ साल में 56% तक गिर गया, लेकिन फिर वो ढाई साल में 138% तक बढ़ भी गया।

2. साल 2008 लेहमैन क्राइसिस : सेनसेक्स 1 साल में 61% तक गिर गया, लेकिन फिर वो डेढ़ साल में 157% तक ऊपर गया।

3. साल 2010 : सेनसेक्स 1 साल में 28% तक गिर कर करेक्शन के दौर में रहा, फिर 3 साल में 96% तक ऊपर आया।

4. साल 2015 : निफ़्टी 1 साल में 21% तक करेक्ट हो कर नीचे आया, लेकिन फिर ढाई साल में 48% तक ऊपर चढ़ा।

इसलिए कह सकते हैं कि मार्केट की गिरावट अस्थायी होती है, जबकि उसकी तरक़्क़ी स्थायी।

निवेश के लिए शुभकामनाएं !